

HIN3A13a
(Expression orale)

Cours-10

चर्चा का विषय : आज के नवयुवकों की समस्याएँ और उनका समाधान

Sujet de discussion : les difficultés de la jeunesse d'aujourd'hui et leurs solutions

आज का युवा वर्ग – यौवन-m jeunesse जिंदगी का सर्वाधिक मादक enivrant अवस्था-f état होता है। इस अवस्था को भोग रहा युवक वर्ग, केवल देश की शक्ति ही नहीं, बल्कि वहाँ की सांस्कृतिक आत्मा का प्रतीक-m symbole भी होता है...

हमारे दूसरे वर्ग, बूढ़े-बुजुर्ग-m seniors जिनके बनाये ढाँचे-m structure पर यह समाज खड़ा रहता आया है; उनका कर्तव्य-m devoir बनता है कि इन नव युवकों के प्रति अपने हृदय में स्नेह और आदर की भावना-f sentiment रखें, साथ ही वर्जना-f interdiction भी। ऐसा नहीं होने पर, अच्छे-बुरे की पहचान उन्हें कैसे होगी ? ...

ऐसे आज 21वीं सदी की युवा शक्ति की सोच में, और पिछले सदियों के युवकों की सोच में जमीं-आसमां का फर्क आया है। आज के नव युवक, वे डेर सारी सुख-सुविधाओं के बीच जीवन व्यतीत करने की होड़-f compétition में अपने सांस्कृतिक तथा पारिवारिक मूल्यों और आंतरिक interne शांति को दावें पर लगा रहे हैं। सफलता पाने की अंधी दौड़ ने जीवन शैली को इस कदर अस्त-व्यस्त और विकृत déformé कर दिया है कि आधुनिकता-f modernité के नाम पर पश्चिमी सभ्यता का अनुसरण-m suivi, उनके जीवन को बर्बाद détruire कर दे रहा है। ...

युवकों के संयमहीन sans maîtrise व्यवहार के लिए हमारे आज के नेता भी दोषी-m coupable हैं। ...वे इनकी ऊर्जा का गलत प्रयोग कर अपने स्वार्थ-m intérêt égoïste की पूर्ति करते हैं ; जिसके फलस्वरूप par conséquent आज युवा वर्ग भटक रहा है। धैर्य, नैतिकता-f moralité, आदर्श जैसे शब्द उनसे दूर होते जा रहे हैं।

...आज टेलीवीजन, घर-घर में पौ फटते ही अपराधी जगत का समाचार, लूट, व्यभिचार-m adultère, चोरी का समाचार लेकर उपस्थित présent हो जाता है या फिर गंदे अक्षील pornographique गानों को बजने छोड़ देता है। ... ये टेलीवीजन चैनल भी युवा वर्ग को भटकाने में अहम रोल निभा रहे हैं।

दूसरी ओर इनकी इस दयनीय pitoyable मनोवृत्ति-f humeur/tendance के लिये उनके माता-पिता व अभिभावक-m tuteur, responsable भी कम दोषी नहीं हैं। वे बच्चों की मानसिक क्षमता का आकलन-m évaluation किये बिना उन्हें आई० ए० एस०, पी०सी० एस०, डाक्टर, वकील, इंजीनियर आदि बनाने की चाह पाल बैठते हैं और जब बच्चों द्वारा उनकी यह चाहत-f désir पूरी नहीं होती है, तब उन्हें कोसने maudire लगते हैं। ... भलाई इसी में है कि बच्चों की मानसिक क्षमता के अनुसार ही माँ-बाप को अपनी अपेक्षा-f attente रखनी चाहिये। अन्यथा उनके व्यक्तित्व-m personnalité का संतुलित विकास नहीं हो पायेगा ; जो कि बच्चों के भविष्य के लिये बहुत हानिकर nocif है।

मेरा मानना है कि युवा वर्ग में इस प्रकार के चिंताजनक व्यवहार के लिये देश की भ्रष्ट, रिश्वतखोर व्यवस्था जिम्मेदार है। जिसमें ये अपने को असहाय महसूस करते हैं। उनके भीतर पनपती कुंठा-f frustration, इस प्रकार उग्र रूप धारण करती है।

आज युवा वर्ग एम०ए०, इंजीनियरिंग आदि की पढ़ाई करके भी बेरोजगार हैं। कारण आज शिक्षा और योग्यता से ज्यादा महत्व सिफारिश-f recommandation का है। ... जब पढ़-लिखकर भी बेरोजगार युवक दर-दर की ठोकरें खाते फिरते हैं, तब उन में आक्रोश-m ressentiment, colère जन्म लेता है। जो आये दिन हमें हिंसक प्रवृत्तियों के रूप में देखने मिलता है। जब तक समाज में ये ऊँच-नीच, नौकरशाही-f bureaucratie रहेगी, युवा वर्ग कुंठित और मजबूर जियेगा।